Vol 4 Issue 8 Sept 2014

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-4 | Issue-8 | Sept-2014
Available online at www.isrj.net

भारतीय परिप्रेक्ष्य में विधवा महिलाओं का पुनर्वास : समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

प्रदीप कुमार एक्का

सहायक प्राध्यापक – समाजशास्त्र , राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय , अम्बिकापुर (छ.ग.)

सारांश :- सन् 1976 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा महिलाओं हेतु विकास फंड की स्थापना की गई। सन् 1976 से 1985 तक के दषक को महिला दशक के रूप में रखा गया। इस अवधि में महिलाओं के प्रति किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के भेदभाव को समाप्त करने के लिए अनेकों कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन प्रयासों से भारत सहित विश्व के तमाम देशों में महिलाओं को पुरूषों के समान अवसर देने के लिए अनेकों कार्यक्रम आयोजित किये गए।विधवापन में सबसे बड़ी समस्या भावनात्मक होती है।विधवाओं के उनके नजदीकी रिश्तेदारों द्वारा भूमि और उत्तराधिकार संबंधी विवादों में अपने घरों से बाहर फेंका जाता हैं।अदालत के माध्यम से तलाक की प्रक्रिया बड़ी जटिल है। इस प्रक्रिया को चलते समय बीत जाता है। बच्चों की मानसिकता पर अधिक प्रभाव पड़ता है। इन दिनों बढ़ती हिंसा, क्रूरता, चरित्र हनन, शराब, विशेष रूप से संयुक्त परिवार में रहने की समस्या, विवाहोत्तर संबंध और बाहरी दुनिया को अवांछनीय प्रभाव से मानवीय और सामाजिक मूल्यों का पतन हुआ है।महिलाओं को मृत पति की संपत्ति में अधिकार तथा अन्य सुविधाएँ, पेंषन लाभ, भत्ते, आर्थिक मदद उपलब्ध करा देनी चाहिए।विधवा के पुनर्विवाह के बाद बच्चों की कस्टडी माँ को मिलनी चाहिए।

मुख्य शब्दः विधवा, सम्पत्ति अधिकार, मनोवैज्ञानिक दशा।

उद्देश्यः—

1.विधवा महिलाओं को सरकारी नौकरियों में स्थान में बढ़ोत्तरी।
2.विधवापन एवं तलाकशुदा मानसिक विकारों से घिरी हुई रहती हैं, उनके स्वास्थ्य हेतु सरकारी मदद।
3.विधवापन एक शाप इस कल्पना को सामाजिक जीवन में स्थान नहीं।
4.अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विधवा महिलाओं की स्थिति।
5.विधवा/तलाकशुदा महिलाओं के अधिकारों की पड़ताल एवं सुधार।
6.विधवाओं के अधिकारों की चुनौतियॉ एवं अवसर।

प्रस्तावनाः—

आज दुनिया भर में लोगों के जीवन स्तर में तेजी से प्रगति हुई है। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के बाद सन् 1946 में 'महिलाओं की दशा' पर आयोग की स्थापना की गई। शोध में यह पाया गया कि विकास गति विधियों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी हो। इस हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ में सन् 1973 में विकास में महिलाएँ नामक समूह की स्थापना की गई। सन् 1976 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा महिलाओं हेतु विकास फंड की स्थापना की गई। सन् 1976 से 1985 तक के दशक को महिला दशक के रूप में रखा गया। इस अवधि में महिलाओं के प्रति किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के भेदभाव को समाप्त करने के लिए अनेकों कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन प्रयासों से भारत सहित विश्व के तमाम देशों में महिलाओं को पुरूषों के समान अवसर देने के लिए अनेकों कार्यक्रम आयोजित किये गए। इन प्रयासों से भारत सहित विश्व के तमाम देशों में महिलाओं को पुरूषों के समान अवसर देने के लिए नीतियाँ, कार्यक्रम एवं कानून बनाए गए। फलस्वरूप महिलाओं की दशा में उल्लेखनीय सुधार हुए। शोध के दौरान यह पाया गया कि महिलाओं की दशा और विकास का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। इसी तथ्य को सन् 1992 के विश्व जनसंख्या की दशा के संस्करण में लिखा गया है कि 'बिन महिलाओं के विकसित हुए किसी का भी दीर्घ कालिक विकास नहीं हो

सकता' (यू.एन.एफ.पी.ए. 1992, पृष्ठि 13) इसी रिपोर्ट में आगे कहा गया हैं कि जिन क्षेत्रों में महिलाओं का दर्जा ऊँचा है उस क्षेत्र में आर्थिक वृद्धि एवं जीवन की गुणवत्ता में सुधार काफी तेज हुआ है परंतु अभाव ग्रस्त महिलाओं में सुधार की गति कम रही।

भारतीय विधवाओं और तलाक–शुदा महिलाओं की जो पति की मृत्यु या जुदाई या कानूनी तरीकों से अलग–अलग रहते हैं। उन पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। कई विकासशील देशों में पिछले 25 वर्षों में प्रकाशित मानव अधिकारों पर रिपोर्ट पर गुमनाम सी जिंदगी जी रही महिलाओं ने गरीबी, स्वास्थ्य, विकास आदि को चुनौती दी है। महिलाओं के इस समूह ने समाज में कई पारम्परिक विचारों एवं मान्यताओं को चुनौती दी है। महिलाओं के तेजी से आर्थिक रूप से स्वतंत्र और उनके अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक बनने के साथ एक अपमान जनक नाकाम शादी के परिणाम स्वरूप तलाक की दर में वृद्धि हुई है।

विधवापन और उसके मनोवैज्ञानिक परिणाम :–

कई विकासशील देशों में विधवा महिलाओं की उम्र, उनके जीवन से संबंधित आर्थिक– सामाजिक इस्तर को दर्शाने वाली कोई रिपोर्ट नहीं है। लगभग दुनिया भर में सभी वयस्क महिलाओं की उन्नति के लिए जिनकी संख्या लगभग 7% से 16% है, संयुक्त राष्ट्र साझा कार्यक्रम (2000) महिलाओं तक पहुँचने में सफल नहीं हुए। यह असफलता कुछ देशों और क्षेत्रों में युवा, महिलाओं और बच्चों के जीवन को प्रभावित करता है जबकि विकसित देशों में विधवापन, बुजुर्ग महिलाओं द्वारा मुख्य रूप से अनुभव होता है। कुछ लड़कियाँ वयस्कता तक पहुँचने से पहले विधवा हो जाती हैं।

महिलाओं को पुरूषों से दो कारणों के लिए विधवा होने की अधिक से अधिक संभावना है, सबसे पहली वजह पुरूषों और महिलाओं के जीवन में मतभेद जो लंबे समय तक बने रहते है, पुरूषों की तुलना में ज्यादा समय तक रहते हैं और बड़ी उम्र के पुरूषों से शादी की वजह से, विधवा होने की तादाद ज्यादा है। दूसरा कारण यह है कि पति की अकाल मृत्यु जीवन की नकारात्मक घटनाओं में से एक है। विडंबना यह है अगर पति से महिला के एक या दो बच्चे हैं तो उनके पालन की जिम्मेदारी महिलाओं पर पड़ती है, महिलाओं की यह संख्या पुरूषों से कहीं अधिक हैं। विधवापन में विशेष रूप से पति की मौत के बाद प्रथमतः महिला आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दबाव में रहती है। उसे असंख्य समस्याओं से गुजरना पड़ता है। अगर पति अच्छा कमाने वाला हो तो उसकी आय से वंचित होना पड़ता है और परिवार आर्थिक कठिनाइयों से घिर जाता है।

कई अध्ययनों से जैसे (अब्दुल्ला और ओगिब, 2002)[1] महिलायें विधवा होने के बाद मानसिक बीमारी का शिकार हो जाती हैं। अध्ययन में विधवायें विधुर की तुलना में ज्यादा दुःखी, अवसाद ग्रस्त और चिंता के लक्षणों से घिरी हुई रहती हैं।

विधवाओं में सबसे बड़ी समस्या अकेलापन है। कई विधवायें खुद रहती हैं, अकेले खुद का काम खुद करती हैं और उनका व्यक्तिगत संपर्क टूट जाता है और आत्म सम्मान की हानि से बचने के लिए वह हर समय भयग्रस्त रहती हैं।

विधवापन में सबसे बड़ी समस्या भावनात्मक होती है। महिला अपने जीवन में पति की भूमिका को खो देती है। सामाजिक जीवन में लोंगो के साथ अभिन्न हिस्सा बन गयी महिला को व्यावहारिक समस्या का नुकसान उठाना पड़ता है। विधवा हर समय भले ही उसका पति अच्छी आदतों वाला न हो, अपने जीवन साथी की जुदाई महसूस करती हैं।

कम उम्र की विधवाओं की सबसे बड़ी समस्या अंतिम संस्कार के बाद अपने दुःख को किस तरह कठिन समय में उबरने के लिए भावनात्मक रूप से जुड़ने के लिए वयस्क विधवाओं के समूह की जरूरत पड़ती है। वह उसे भावनाओं पर अंकुश रखते हुए व्यावहारिक रूप से तैयार करती हैं। विधवाएँ एक प्रमुख आय स्त्रोत एक पति की मौत के बाद खो देती हैं, अक्सर उनके वित्तीय तनाव का कारण बन जाता है।

कई अध्ययनों से पता चलता है, जैसे– (शूस्टर और बटलर, 1989य2 रेड्डी, 2004)3 वास्तव में विधवापन पुरूषों के लिए या महिलाओं के लिए मनोवैज्ञानिक तौर पर अधिक कठिन अनुभव है। विधवापन पुरूषों की तुलना में महिलाओं के लिए आर्थिक रूप से, आमतौर से, बड़ी समस्या है, अन्य अध्ययनों, जैसे– (इवरसन एट अल, 1992)4 इसमें पुरूषों पर ज्यादा मजबूत प्रभाव पड़ने की सूचना दी है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में विधवापन समस्या :–

भारत में विधवाओं की सबसे बड़ी संख्या मौजूद है। यह संख्या दुनिया की महिला आबादी का 10% और पुरूषों का केवल 3% है। और इस संख्या की वजह से एच. आई. वी. / एड्स की संख्या में वृद्धि हो रही है। इस वजह से नागरिक संघर्ष बढ़ रहा है। भारत में 35 की आयु में महिलाओं के 12% 60 की या उसके अधिक आयु में महिलाओं में 50 में से 4 विधवा हैं। विधवाओं में से सिर्फ 10% फिर से विवाह करते हैं। भारत एक पितृसत्तात्मक समाज का देश है, इसमें एक पुरूष के माध्यम से एक महिला को सामाजिक स्थिति प्रदान की जाती है इसलिए महिला आदमी के बगैर खुद को श्सतीश विधवा) एक सामाजिक मौत देती हैं और महान बन जाती हैं। यह प्रथा राजस्थान राज्य में प्रचलित थी पर समय के हिसाब से शासन ने इस पर पाबंदी लगा दी है। भारत में विधवापन एक व्यक्तिगत स्थिति होने के अलावा एक सामाजिक समस्या के रूप में मौजूद है। यह केवल ऐसा देश है जहाँ विधवापन एक पाप, अभाव, दोषारोपण, अनुष्ठान और धार्मिक प्रतिकों द्वारा मौजूद हैं।

विधवा विवाह भारत में उच्च जातियों में निषेध कर दिया जाता है। महिलाओं को पुनर्विवाह की अनुमति तभी मिलती है, जब उसे अपनी संतान और संपत्ति को त्यागना पड़ता है। महिलाएँ अगर दूसरी शादी करें तो उसे संतान और उसकी खुद बीमारी का इलाज होगा या नहीं यह चिंता सताती जाती है। भारतीय गरीब परिवारों में विधवाएँ अक्सर 'बुरी नजर का शिकार' बन जाती हैं। उसका परिवार उसे अवांछित बोझ समझता है (संयुक्त राष्ट्र महिला 2000, फुलर, 1965)5। बीमार भाग्य और सामाजिक उपेक्षा

के कारण विधवाएँ हमेशा मनोवैज्ञानिक दबाव में रहती हैं।

विधवाओं के उनके नजदीकी रिश्तेदारों द्वारा भूमि और उत्तराधिकार संबंधी विवादों में अपने घरों से बाहर फेंका जाता हैं। विधवा अगर शिक्षित न हो तो उसका ज्यादातर घरों में दास के रूप में शोषण किया जाता हैं या उसे घरेलू मजदूर बनाकर भीख माँगने या वेश्यावृत्ति के लिए विवश किया जाता हैं।

भारत में विधवा पूनर्वास केंद्रों में एक अनुमान के अनुसार 20,000 विधवाओं को जीवित रहने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। भारत में मथुरा, वाराणसी और तिरूपति जैसे मंदिरों पर उनके परिवारों द्वारा परित्याग करने के बाद उनका आर्थिक शोषण, मीडिया (डैमन, 2007)[6] में दर्ज किया गया है। भारत में ऐसे हजारों केंद्र हैं, जिसमें घोर गरीबी और निचले जीवन स्तर पर विधवाएँ रहती है। अकेले वृंदावन में यह संख्या लगभग 15,000 है। यहाँ युवा विधवाओं को वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर किया जाता है। जो अधेड़ हैं वह तीर्थ–यात्रियों से और पर्यटकों से भीख माँगती है। यह नजारा वहाँ आम है लेकिन शासन ने उनके लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया है। वृद्ध महिलाएँ जब यहाँ लायी गयी थीं, तब वह युवा विधवा थीं। मंदिर विधवाओं और सामयिक सती के मुद्दों का अंतरराष्ट्रीय प्रेस में प्रचार करने में मशगूल है लेकिन, वहीं उनके रिश्तेदार उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं। वहीं विधवाएँ सड़कों पर रहती हैं और भीख माँगने के लिए शहरों की ओर पलायन करती हैं।

अपर्याप्त आश्रम, गरीबी, पोषण की कमी, स्वास्थ्य देखभाल और असुरक्षा इतनी कमियों की वजह से विधवाएँ शारीरिक रूप से बीमार रहती हैं। विधवाएँ बलत्कार का शिकार होती हैं। यह घटनाएँ यहाँ आम पायी जाती हैं। विधवाओं में निरक्षरता, हिंसा की धमकियाँ, सुस्त न्याय प्रणाली ऐसी अनेक बाधाओं पार करना लोहे के चने चबाने जैसा है (ब्रूस, 2005)7।

शोध में एक बड़ी संख्या में पति की मौत के बाद मनोरोग पर ध्यान केंद्रित किया गया। युवा विधवाएँ और विधुर मनोरोग के शिकार हो गये हैं। यह निष्कर्ष में यह पाया गया कि चिंता के साथ मादक द्रव्यों का सेवन बढ़ गया है।

तलाक और महिलाएँ :–

दुनिया भर में तलाक के मामलों में तेजी से वृद्धि हुई है। महिलाएँ आर्थिक रूप से अधिक स्वतंत्र हो गयी हैं। अदालत के माध्यम से तलाक की प्रक्रिया बड़ी जटिल है। इस प्रक्रिया को चलते समय बीत जाता है। बच्चों की मानसिकता पर अधिक प्रभाव पड़ता है। इन दिनों बढ़ती हिंसा, क्रूरता, चरित्र हनन, शराब, विशेष रूप से संयुक्त परिवार में रहने की समस्या, विवाहोत्तर संबंध और बाहरी दुनिया को अवांछनीय प्रभाव से मानवीय और सामाजिक मूल्यों का पतन हुआ है। तलाकशुदा जोड़े में अन्य व्यक्तियों की तुलना में मानसिक रोग ज्यादातर पाया जाता है। चिंता, अवसाद, क्रोध, अकार्यक्षमता, अकेलेपन से ग्रस्त तलाकशुदा जोड़े आत्महत्या, मोटर वाहन दुर्घटनाओं और हत्या के रूप में सामने आते हैं। तलाकशुदा महिलाएँ हर पल मानसिक अस्वस्थता का अनुभव करते हुए आर्थिक कठिनाइयों का सामना करती हैं (जासन, 2002)[8]। पुनर्विवाह के लिए महिलाओं से ज्यादा पुरूष तुलना में अधिक उत्सुक रहते हैं, (चेर्लिन, 1992)[9]। यह अध्ययन में पाया गया है। तलाक हुए व्यक्तियों में मनोवैज्ञानिक संकट काफी सालों तक पाया गया (बूथ और अमाटो, 1991)[10]।

तलाकशुदा को एक साथी की कमी हमेशा खलती है। आमतौर पर सामाजिक समर्थन की जरूरत हमेशा पड़ती है। तलाक अलग–अलग तरीकों से महिलाओं और पुरूषों की भलाई को प्रभावित करता है। अगर पुरूष की आय अधिक हो तो महिलाओं पर नकारात्मक तरीके से मनोवैज्ञानिक दबाव पड़ता है। अगर बच्चें महिलाओं के पास हों, तो उन्हें एक लड़ाई करने की ऊर्जा मिलती है। शादी में परिवारों का अधिक धन लगता है, तो उनकी यहीं कोशिश रहती है, कि दोनों की सुलह हो जाए।

सायमन (2002) महिलाओं के तलाक के बाद महिलाएँ मानसिक दबाव में और पुरूषों के मद्यसेवन में महत्वपूर्ण वृद्धि पायी गयी है।

तलाक के बाद अधिकतर महिलाओं को बच्चों की विरासत प्राप्त करने के लिए एक लंबी कानूनी लड़ाई लड़नी पड़ती हैं। शादी के बाद घर के रख–रखाव में महिलाओं का योगदान पुरूष की तुलना में अधिक होता है। महिला अगर रोजगार उपलब्ध हो तो वे आत्मविश्वास से भरी हुई रहती है और अपनी सहयोगी मित्रों के साथ जीवन को व्यापक बनाने की कोशिश करती है। रोजगार की वजह से अपनी व्यक्तिगत पहचान बनाती है।

हालांकि लाभकारी रोजगार के बावजूद घरेलू कार्य में महत्वपूर्ण योगदान करने की उम्मीद परिवार वाले करते है।

विकासशील राज्यों में महिलाओं के बीच निराशा जनक दर से वृद्धि हुई है। युवा पुरूष बड़ी उम्र की महिलाओं से शादी कर रहे हैं और पुनर्विवाह जो विधुर पुरूष, युवा महिलाओं से शादी कर रहे हैं। देर से जीवन शुरू करने के यदि इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि महिलाओं का विधवा होना संभव है।

निष्कर्षः–

विधवापन और तलाक के बाद व्यक्ति के जीवन में कई समस्यायें उभर कर आती हैं, जैसे– अपराध, पश्चाताप, अलगाव की भावना में वृद्धि होती हैं। विशेष रूप से महिलाएँ सामाजिक, सांस्कृतिक पहलुओं के कारण अक्सर मानसिक बीमारी की शिकार होती हैं।

समय की मांग यह है कि मीडिया के विभिन्न साधनों के माध्यम से आमजनता में जागरूकता करने के लिए शीघ्र हस्तक्षेप शुरू कर देना चाहिए ताकि गैर सरकारी संगठन सामने ऐसी महिलाओं की मदद के लिए आएँ। अन्य स्वसहायता समूहों को ऐसी

संस्थाओं का मूल्यांकन करना चाहिए जो इस अनुभव से गुजरी हुई महिलाओं को दूसरें की मदद मुहैया कराएँ। यह फायदेमंद होगा यदि इन महिलाओं का पुनर्वास के साथ उनकी देखभाल और सहायता करके दोहरे लाभ की योजना बनाएँ।

महिलाओं को मृत पति की संपत्ति में अधिकार तथा अन्य सुविधाएँ, पेंशन लाभ, भत्ते, आर्थिक मदद उपलब्ध करा देनी चाहिए।

विधवा के पुनर्विवाह के बाद बच्चों की कस्टडी माँ को मिलनी चाहिए।

पीड़ित महिलाओं की उचित देखभाल के लिए गैर सरकारी संगठनों को उचित मार्गदर्शन देकर शिक्षित करने की जरूरत है।

संदर्भ एवं टिप्पणियाँ :–

1.अब्दुल्लाह डी., सेंट्रल सऊदी अरब सऊदी मेडिकल जर्नल में सऊदी वयस्क Primarycareejhtksa के बीच मानसिक बीमारी का Ogbeide डी ओ व्याप्तता 2002;…23 ¼6½ %721&724[PubMed]

2.Schuster TL, Butler EW "Bereavement, Social Networks, Social Support and Mental Health." In: Lund Dale A., editor.Older Bereaved Spouses: Research with Practical Applications. New York: Hemisphere; 1989.pp.55-68.

3.Reddy PA Problems of Widows in India. New Delhi: 2004.

4.Iverson T., Rosenbluth F. The Political Economy of Gender% Explaining Cross-National Variation in the Gender Division of Labour and the Gender Voting Gap. American Journal of Political Science. 2006; 50(1):p1-19.

5. फुलर एम. भारतीय लोक विश्वास एशियाई लोकगीत अध्ययन में " नाम का नामकरण " 1965... 24(1) :63–79.

6. समाज से त्याग दिया डैमन ए, विधवाओं को मरने के लिए शहर के झुंड. CNN.com.2007.(25 मार्च 2008 को अभिगम) में उपलब्ध हैं: http://edition.cnn.com/2007/WORLD/asiapef/07/05/damon.india.widows/index.html .

7.ब्रूस ए विधवाओं नदी पर, वाशिंगटन पोस्ट. 2005 अक्टूबर 11, (25 मार्च 2008 को अभिगम),में उपलब्ध है: http://www.washingtonpost.com/wdyn/content/article/2005/10/07/AR2005100700471 pf.html

8.Johnson Dr' Wu J. An empirical test of crisis, social selection, and role explanations of the relationship between marital disruption and psychological distress: A pooled time-series analysis of four-wave panel data. Journal of Marriange and the Family. 2002; 64:211-224.

9. चेर्लिन ए जे कैम्ब्रिज, एमए: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1992. विवाह, तलाक, पुनर्विवाह.

10. स्वास्थ्य और सामाजिक व्यवहार के 10 बूथ ए, अमाटो पी.तलाक और मानसिक तनाव जर्नल 1991;... 32 : 396–407[PubMed]

प्रदीप कुमार एक्का

सहायक प्राध्यापक – समाजशास्त्र , राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय , अम्बिकापुर (छ.ग.)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net